किताबों (कुरआन) पर ईमान लाने का मतलब क्या हैं?

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

किताबों पर ईमान लाने का मतलब ये है कि अल्लाह पाक ने अपने रसूलों के जरिये इन्सानो की जरूरत के मुताबिक जो हिदायतनामे भेजे सब को सच्चा माने, उनमे आखिरी हिदायत-नामा कुरआन मजीद है. अगली कौमों ने अपनी किताबें बिगाड डाली, तब आखीर मे अल्लाह ने अपने रसूलुल्लाहﷺ के जरिये आखरी किताब भेजी जो साफ और स्पष्ट है, जिस मे कोई कमी नही, और जो हर तरह के बिगाड से सुरक्षित है, और अब इस किताब के सिवा दुनिया मे कोई ऐसी किताब नही जिस के जरिये अल्लाह तक पहुंच सकते हो.

◆ कुरआन की इत्तीबा का मतलब

जियाद बिन लबीद रदी, फरमाते है की रसूलुल्लाहﷺ ने एक

डरावनी चीझ का जिकर किया और फरमाया की ऐसा उस वकत होगा जबकि दीन का इल्म मिट जायेगा तो मेने कहा की ऐ अल्लाह के रसूलुल्लाहﷺ इल्म क्यों मिट जायेगा जबकि हम कुरआन पढ रहे और अपनी औलाद को पढा रहे है और हमारे बेटे अपनी औलाद को पढाते रहेंगे. रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया बहुत खूब ऐ जियाद रदी, मे तुम्हे मदीने का बहुत ही समझदार आदमी समझता था क्या तुम नहीं देखते की यहूद वा नसारा तौरात और इंजील की कितनी तिलावत करते है पर उनकी तालीम पर कुछ भी अमल नहीं करते?. [इबने माझा रिवायत का खुलासा]

◈ अल्लाह के कुरआन की पेरवी करने की बरकते

जो शख्स अल्लाह की किताब की पेरवी करेगा वो न तो दुनिया मे गुमराह होगा, और न आखिरत मे उसके हिस्से मे महरूमी आयेगी फिर उन्होंने ये आयत पढी सुरे ताहा 20/123 तरजुमा- जो शख्स मेरे हिदायात नामे की पेरवी करेगा वो न तो दुनिया मे भटकेगा और ना आखिरत मे बदबख्त होगो. [मिश्कात; रावी

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ कुरआन से फायदा हासिल करने का तरीका

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कुरआन मे पांच चीजे है, हलाल, हराम, मुहकम, मुतशाबेह और इमसाल, तो हलाल को हलाल समजो, हराम को हराम मानो, मुहकम (कुरआन का वो हिस्सा जिसमे अकीदा और कानून वगैरे की तालीम दी गई है) उसपर अमल करो, और मुतशाबेह (कुरआन का वो हिस्सा जिसमे गैब की बाते बयान हुवी है जेसे जन्नत, दोजख, अर्श, कुर्शी वगैरे) पर ईमान रखो और उसकी कुरेद मे मत पडो और इमसाल (कोमो की तबाही के इबरतनाक किस्से) से नसीहत हासिल करो. [मिश्कात; रावी अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की अल्लाह ने कुछ फराइज मुकर्रर किये है उन्हें बरबाद ना करना, और कुछ चीझो को हराम किया है उनको ना करना, और कुछ हद बन्दिया की है उन्हें फलांग कर आगे ना बढना, और कुछ चीझो से उसने बगैर बोले खामोशी अपनाई है तुम उनकी कुरेद मे ना पडना. [मिश्कात; रावी जाबिर रदी, रिवायत का खुलासा]